© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

प्राथमिक स्तर के शिक्षाको में तनाव एवं असन्तोश कें कारण

Rajeev Kumar
M.A (Education) NET

वस्तुतः शिक्षक समाज का मार्गदर्शक होता है । उसका कृतित्व एवं व्यक्तित्व समाज के लिये मानक अथवा आदर्श होता है । शिक्षक समाज में बौध्दिक क्रान्ति को जन्म देता है । शिक्षक समाज का आदर्श प्रतिमान होता है, जिससे छात्र एवं सर्व साधारण सभी अन्तः एवं बाह्य रूप से प्रभावित होते हैं । ऐसे में, शिक्षकों का व्यवहार आदर्शवादी एवं सन्तुलित होना अत्यावश्यक है । परन्तु किंचिद अपरिहार्य कारण वशाद् आज स्थिति विषमता युक्त प्रतीत होती है, जिसके मूल में है । शिक्षकों में तनाव । प्राथमिक विधालय के संदर्भ में फ्राबेल का मत है "इस उधान में बालक पौधे, पाठशाला बगीचा तथा शिक्षक माली होता है ।" (1)

जहाँ तक आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्राथमिक स्तर की बात करें तो इसकी शिक्षा पध्दति में कई आधारभूत संरचनाओं की कमी के साथ ही शिक्षकों में पारस्परिक विद्वेष इत्यादि भावनाओं के कारण उनमें मानसिक स्तर पर तनाव रहता है । जिससे उनकी कार्यशैली भी प्रभावित होती है । परिणामस्वरूप छात्रों की पठन-पाठन की प्रक्रिया भी प्रभावित होती है । प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों में तनाव के लिये कुछ घटक जिम्मेदार हैं जिनका विवेचन अग्रवत पंक्तियों में ध्यातव्य है ।

प्राचीन काल में उन्हीं को गुरुत्व पद का कार्य भार सौंपा जाता था, जिनमें किसी प्रकार का व्यक्तिगत व सामाजिक दोष नहीं होता था । उनका कार्य समाज लोक मांगल्य की चिंतन में होता था, चिन्ता अथवा तनाव लेने का नहीं था । किन्तु आज की स्थिति तो यह है कि प्राथमिक विधालय का शिक्षक प्रारम्भ से ही व्यग्र या युं कह लें कि चन्ताशील रहता है । आज की सामाजिक अवदसा कुछ इस प्रकार है कि शुरु से ही शिक्षक तनाव में रहने लगता है ।

शिक्षक को आदर्शवादी होना चाहिए । अरस्तु के अनुसार, "शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति को नैतिक एवं बौद्धिक सद्गुणों से युक्त बनाना है, व्यक्ति को ऐसे श्रेष्ठतम मूल्यों से अलंकृत करना है जो मानवता के लिये आवश्यक है । यह धारणा ही आदर्शवाद का प्रतिरूप है ।" (2)

यद्दपि इन सभी में मूल्यों के होते हुए भी आज का प्राथमिक स्तर का शिक्षक कहीं न कहीं मानसिक तनाव की स्थिति में देखा जाता है । शिक्षक जब तनाव में होगा तो यह शिक्षण प्रक्रिया का कुशल सम्पादन किस प्रकार कर सकेगा । अतः सम्पूर्ण समाज का यह कार्य है कि वह अध्यापक को ऐसी परिस्थिति ऐसा मन

दे जिससे वह अपनी कार्य कुशलता का परिचय देश में उत्तम कोटि के नागरिकों व उच्च कोटि की बौद्धिकता का निर्माण कर दे सके ।

शिक्षक अथवा गुरु शुद्ध अपने आप में गुरुता संपूर्णता एवं महत्ता का बोधक है । '"वैदिककाल में गुरु-शिष्यों का संबंध अत्यन्त मधुर थे । गुरु का प्रयास 44अपन- शिष्यों का शारीरिक, मानसिक तथा आधा-विकास करना था।' किन्तु आज उसकी संकीर्ण मानसिकता उसके स्वरूप को विकृत करती है। 44 है।4 है (3((है।(3) । गुरु शुद्ध ही पूर्णता, निश्चित्ता एवं आदर्शवादिता का प्रतीक है, ऐसे में उसकी मानसिक व्यग्रता छात्र एवं समाज दोनों के लिए अहितकर है । (3)

शिक्षकों में तनाव के विभिन्न दृष्टिकोणों का अनावरण किया जा सकता है । जिसमें उसका एक समाजशाश्त्रीय दृष्टिकोण भी है, जो यह कहता है कि समाज का आधुनिक वातावरण के लगातार तेजी से हो रहे बदलावों एवं विकास की तीव्र प्रक्रिया के कारण अध्यापकों को सामंजस्य न बना पाने के कारण उनमें तनाव पाया जाता है ।

एक दृष्टिकोण ये भी है जिसमें ये माना जाता है कि सरकारी नीतियों एवं पशासनिक दबाव अथवा अत्यधिक कार्यभार के कारण अर्थात् शिक्षणेतचर गतिविधियों के कारण प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों में तनाव व्याप्त रहता है ।

भारत वर्ष में शिक्षा की परम्परा कोई नई वस्तु नहीं ह । इस देश में अत्यन्त प्राचीन काल से ही शिक्षा और ज्ञान की श्रेष्ठतम प्रणाली प्रचलित रही है । (4)

वर्तमान में, प्राथमिक विधालयों में शिक्षकों की दशा अत्यन्त सोचनीय है । उनकी दैनिक कार्य प्रणाली को देखकर ऐसा लगता है मानो वे अध्यापक के दायित्वों से सर्वथा अनभिज्ञ हैं ।

"किसी राष्ट्र के पुनर्निर्माण के लिये शिक्षा सर्वोत्तम साधन है । नियंत्रित शिक्षा द्वारा नवयुवकों के विचार और भावना में वे सभी विशिष्टतायें समाहित की जा सकती हैं । जिनके सहारे उन्हें अपने और अपने देश के गौरव तथा आत्म सम्मान का बोध हो सके । व्यवस्थित अथवा नियंत्रित शिक्षा द्वारा भी व्यक्ति को वह प्रेरणा प्राप्त होती है जिसके कारण वह अपनी सारी विभिन्नताएँ भूलकर देश की प्रगति और निर्माण में सहायक बनता है । शिक्षा व्यक्ति को केवल ज्ञान ही नहीं देती बल्कि उसका निर्माण भी करती है । छात्रों के निर्माण से ही राष्ट्र का निर्माण होता है ।" (5)

इस तरह हम यह देखते हैं कि शिक्षक की समाज निर्माण में महती भूमिका है । अतः शिक्षक का तनाव रहित होना अत्यावश्यक है और यह तभी सम्भव है जब हम तनाव के मूल कारण को जाने समझें और उसके निवारणार्थ प्रयत्न करें । तो आइये अग्रांकित पंक्तियों में इसका विश्लेषण करते हैं ।

प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों में तनाव के कारकों को निम्नांकित रूप में रेखांकित किया जा सकता है-

- **वैयक्तिक स्तर पर**
- अयोग्यता
- परिपक्वता का अभाव
- संकीर्ण मानसिकता
- मानवीय संवेदनाओं की कमी
- स्वार्थपरता एवं धन लोलुता
- असामंजस्य अथवा सन्तुलन का अभाव
- पारस्परिक द्वेष की भावना
- अहंकारी होना

उपर्युक्त उनकी चारित्रिक कमजोरियाँ अथवा व्यक्तिगत कमजोरियाँ हैं, जिसके परिणामस्वरूप नमें तनाव पाया जाता है ।

(2) प्रशास्निक स्तर पर

- प्रशासनिक शैथिल्यता
- आधारभूत संरचनाओं को अभाव
- शैक्षिक प्रशासनिक प्रबंधन की कमी
- शिक्षकों की संख्यात्मक गुणात्मक कमी
- वैधानिक कठोरता का अभाव
- बेसिक शिक्षा नियमावली का प्रभावी क्रियान्वयन न होना
- अधिकारियों का भष्टाचार युक्त होना ।
- सशक्त प्रशासन एवं प्रभावी नेतृत्वकारियों की कमी, केन्द्रीय योजनाओं के कारणः मिड डे मिल का ।

अतिरिक्त कार्यभार । अन्य लिपिकीय कार्य भी ।

(3) मनोवैज्ञानिक स्तर पर

- शैक्षिक ढांचे व परीक्षा प्रणाली का दोषयुक्त होना
- शिक्षकों के लिये किसी भी प्रकार का कार्य विश्राम
- प्रणाली व रिफ्रेशमेन्ट व्यवस्था का न होना
- सरकारी तनाव शैथिल्य युक्त योजनाओं का अभाव

- निरुद्देश्य पठन-पाठन प्रक्रिया
- विधालयों में अवमूल्यन की समस्या
- विधालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं की समस्या
- शिक्षक भर्ती प्रक्रिया में ढील या गड़बड़ी
- परीक्षा प्रणाली का दोषयुक्त होना

प्राथमिक विधालयों में शिक्षकों का अभावः कारण

विधालयों में गुणात्मक शैक्षिक व्यवस्था का अभाव

- अन्य मानवीय मनोवैज्ञानिक कारक

(4) सामाजिक स्तर परः

- प्रायः अभावकों का अशिक्षित एवं जागरुक न होना
- अपसी मतभेद
- स्वभावगत निष्क्रियता
- अकर्मण्यता
- दायित्व बोध का अभाव
- शिक्षकों पर अत्यधिक गैर-मतलबी कार्य
- गुणात्मक शिक्षणऩ हेतु सामाजिक वातावरण में कमी
- निम्न लक्ष्यों का होना

(5) अन्यः

- पारस्परिक वैमनस्य
- स्व अनुशासन की कमी
- कर्तव्य निर्वाह के प्रति उदासीनता
- लिपिकीय अथवा कागजी कार्यभार की अधिकता
- सरकार द्वारा शिक्षकों को पर्यआप्त आधारभूत सुविधाओं का न उपलब्ध करवा पाना ।
- किसी रूचिकर व रोमांचाकी लक्ष्यों का न होना ।
- पदाधिकारियों का अपनी शक्तियों का दुरूपयोग
- अधिकांशतः महिलाओं की मानसिकता ।
- गुटबाजी इत्यादि ।

उपर्युक्त विवरण के आधार पर यह कहना अतिरंजित न होगा कि आधुनिक प्राथमिक शिक्षक व्यक्तिगत सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं प्रशासकीय कारणों से अपने दायित्वों से विरत होकर तनाव ग्रस्त होकर किं कर्तव्य विमूढ़ हो गया है । आज ऐसी व्यवस्था मन व माहौल दे जिसमें वे अपना शत प्रतिशत कौशल प्रकट कर राष्ट्र निर्माण कर सके ।

निवारण-

- ❖ प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों में तनाव के निवारण हेतु उनमें अग्रलिखित सुधारों की आवश्यकता है-
- ❖ शिक्षकों की चयन प्रक्रिया को सुदृवढ़ आधार प्रदान करना साथ ही सुधार हेतुसाक्षात्कार विधि को अपनाना ।
- ❖ गुणात्मक चयन प्रक्रिया की वांछनियता
- ❖ व्यापक स्तर पर शिक्षण प्रशिक्षण की प्रक्रिया को क्रियान्वित करना ।
- ❖ प्रारम्भ से ही उच्च कोटि का प्रशिक्षण प्रदान करना ।
- ❖ प्राथमिक स्तर के शिक्षकों में गुरुत्व स्थापित करना
- ❖ शिक्षा के व्यवसायिकरण को प्राथमिक स्तर पर ही रोकने का प्रयास करना ।
- ❖ शिक्षकों में सहिष्णुता की भावना को बढ़ावा देना
- ❖ शिक्षकों का दृष्टिकोण व्यापक करवाना
- ❖ उनमें पारस्परिक सौहार्द स्थापित करना
- ❖ उनकी विचारधारा को वृहद् व व्यापक बनाना
- ❖ अहं की भावना का परित्याग करवाना

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन में हम देखते हैं कि शिक्षक प्रायः किसी न किसी कारक के चलते दबाव या तनाव में रहते हैं परिणामतः वे अपने कुशल कार्य सम्पादन में सफल नहीं हो पाते । वास्तव में तो शिक्षक का कार्य मात्र उत्कृष्ट कोटि की शिक्षा देना है किन्तु आज की पद्धति ऐसी हो गई है कि अक्सर शिक्षक तनाव में रहते हैं ।

शिक्षकों के तनाव के लिये उनका वैयक्तिक सामाजिक, प्रशासनिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर जिम्मेवार है । इसके निवारणार्थ उपर्युक्त सबी में बदलाव की आवश्यकता है इसके लिये सरकार को भी कड़े निर्णय लेते हुए अपनी नीतियों में भी फेर बदल कर संशोधन करना होगा ।

निष्कर्षतः आज समाज को प्राथमिक स्तर से ही शिक्षकों में आपसी वैमनस्य को रोकना होगा । शुरुआत से ही अध्यापकों का ये कर्तव्य होगा कि वे बच्चों में व आपस में सहयोग एवं सामंजस्य कि भावना

विकसित कर, अन्य समस्याओं से दर किनार करते हुए अपने मानसिक व्यग्रता अथवा तनाव को दूर कर सकते हैं ।

Refrences

1. 1,2- सूची ग्रन्थ सूची-शर्मा श्रीमती आर के वर्तमान भारतीय समाज और प्रारंभिक शिक्षा पृष्ठ संख्या 70
2. 3,4- पाण्डेय डाँ राम सकल भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, तृतीय संस्करण पृष्ठ संख्या 8,48
3. 5. पाण्डेय डाँ राम सकल भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, तृतीय संस्करण पृष्ठ संख्या 8.